Violence Matters

Gender based violence

Hindi version PDF

Azad Foundation

Azad Foundation

हिंसा के मायने ...

जेण्डर आधारित हिंसा

मेरा नाम रोहित है और मैं 25 वर्ष का हूँ । मैं जयपुर शहर के अशोकपुरा एरिया में रहता हूँ एवं 2018 से आज़ाद फाउण्डेशन के साथ कम्यूनिटी मोबिलाइजर के पद पर किशोरों एवं युवा पुरुषों के साथ ''मेन फार जेण्डर जस्टिस'' कार्यक्रम के तहत जेण्डर समानता के लिए कार्य कर रहा हूँ।

समुदाय में युवाओं के साथ जेण्डर समानता पर उनकी समझ बनाने के कार्य के दौरान पितृसत्ता, धोंसपूर्ण मर्दानगी, महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा आदि पर मेरी बहुत अच्छी समझ बनी है। मैंने कई बार समुदाय में देखा है कि धोंसपूर्ण मर्दानगी की सोच ने युवा लड़कों एवं पुरुषों के कई परिवारों को बर्बाद किया है। एक असली मर्द बनने की होड़ में वह रूढ़िगत सामाजिक नियमों को बिना सोचे समझे पालन करते हैं और बढ़ावा देते हैं परन्तु मैंने कई ऐसे पुरुषों को भी देखा है जिन्होंने समुदाय में इस विषाक्त मर्दानगी से बाहर निकलकर सकारात्मक मर्दानगी को अपनाया है। समुदाय में युवाओं के साथ कार्य करने के दौरान मुझे कई ऐसे अनुभव हुए हैं जिसमें लड़के आक्रामक व्यवहार दिखाने की कोशिश करते है, ज्यादा गर्लफ्रेण्ड बनाने वाले को असली मर्द समझना, तेज गाड़ी चलाना, बॉडी बनाना, लड़कियों को छेड़ना, लडकियों/महिलाओं पर नियंत्रण करना, घर के काम करने वालों की मर्दानगी पर सवाल खड़े करना आदि।

शादी को हमारे समाज में एक शुभ कार्य के रुप में माना जाता है। लता की जब कमलेश से शादी हुई तो लता ने भी अपनी जिन्दगी में अपनी पंसन्द की नौकरी कर के आत्मनिर्भर बन अपनी एक अलग पहचान बनाने का सपना देखा था और उम्मीद थी कि उसका पति कमलेश इन सपनों को पूरा करने मे उसका सहयोग करेगा।

आज हम एक ऐसी कहानी के बारे में बात करेंगे जिसमें कमलेश अपनी पत्नी के साथ छोटी–छोटी बातों पर गाली गलौच, मारपीट करता है। महिलाओं के साथ हिंसा की ऐसी कई कहानियॅा हमारे आस पास है। हमारे समाज में ऐसे कई मर्द है जो धोंसपूर्ण व्यवहार करते है। यह कहानी केवल कमलेश और लता की नही है बल्कि उन सभी की है जो महिलाओं के साथ हिंसा करते हैं।

लता

कमलेश

कमलेश की माँ

साहिल

विनय

कमलेश के बॉस

सुरेश

लता और कमलेश दोनो की शादी हो जाती है। कमलेश किसी कम्पनी में जॉब करता है और लता घर संभालती है। हिंसा के मायने लता की कहानी है जिसका जीवन केवल उसके पति की जिंन्दगी के इर्द गिर्द घूमता है और उसका पति छोटी छोटी बातों पर उसके साथ मारपीट करता है। इन सब से तंग आकर लता कमलेश को छोड़ने का निर्णय लेती है और अपने भाई के घर वापिस चली जाती है और ड्राईविंग कोर्स में एडमिशन ले लेती है। परन्तु सवाल यह है कि किसी भी रिश्ते में कैसे महिलाओं के साथ होने वाली हिंसा के लिए कोई जगह हो सकती है ?तो कहानी शुरु होती है लता और कमलेश की शादी से।

लता एवं कमलेश की शादी हो रही है

शादी के कुछ दिनों बाद....
लता सुबह उठ कर अपने घर के कार्यो के बारे में सोचने लगती है। कमलेश अभी भी सो रहा है।
मैं जल्दी से काम कर लेती हूँ। अभी मुझे कमलेश के लंच के लिए टिफिन तैयार करना है, घर की सॉफ सफाई और बर्तन भी साफ करने है। अरे दिन भर काम ही काम और कुछ तो सोचने का समय भी नही मिलता।
SAM

वह एक काम के बाद दूसरे काम को जल्दी से खत्म करने लगती है

कई काम करने के बाद लता को चिंता होती है कि अगर समय से टिफिन तैयार नहीं किया तो कमलेश फिर चिल्लायेगा।

लता मेरा टिफिन कहॉ है ?

लता रसोई से भाग कर कमलेश को टिफिन देती है।
तुम क्या कर रही थी ? मुझे देर हो रही है। एक काम भी तुम समय से नहीं कर सकती हो। किसी भी काम की नहीं हो।

कमलेश आफिस के लिए निकल जाता है।

मुझे अभी तो कपड़े तैयार करना है। इसके बाद सफॉई करनी है नहीं तो फिर कमलेश डॉटेगा पिछली बार ही मैंने केवल कपड़े बैड पर भूल गयी थी तो कितना चिल्लाया था।

मेरी जिन्दगी भी क्या बन गयी। मुझे दिन भर केवल घर के काम की चिंता एवं कमलेश की डॉट का ही डर लगा रहता है।

काश! मैने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली होती तो आज मै कही नौकरी कर सकती थी और मेरी जिन्दगी कुछ अलग होती।

A.J. INDUSTRIES PVT LTD
10:25
कमलेश कम्पनी पॅहुचता है। उसको आज फिर ऑफिस पहुचने में देरी हो जाती है।

टारगेट पूरे नही करने पर कमलेश का बॉस उस पर चिल्ला रहा है और कमलेश गर्दन नीची कर चुपचान सुन रहा है।
सॉरी सर, इस महीने मै जरुर पूरे टारगेट कर लूँगा।
तुम्हें तनख्वाह किस बात की मिलती है ? जो हमने तय किए थे उसमें से मुश्किल से तुमने आधे टारगेट पूरे किए हैं। अगर ऐसा अगले महीने फिर हुआ तो तुम अपनी जॉब खो सकते हो।

मुझे तुम्हारी वजह से बॉस से सुनना पड़ता है। कुछ भी कर के यह काम करो वरना तुम्हारी जॉब चली जायेगी।
कमलेश अपनी सीट पर वापिस आ जाता है और अपने जूनियर के उपर इस महिने के टारगेट पूरे नहीं होने पर चिल्लाता है।

बॉस के चिल्लाने से कमलेश अभी भी परेशान है
बड़ी अच्छी बात है कि वह शांत हो गया। वह हमेशा मुझ पर ही चिल्लाता रहता है चाहे मेरी गलती भी नहीं हो।

कमलेश आफिस से फ्री होकर अपने दोस्त शाहिल और विनय से मिलने जाता है।

मुझे आज थोड़ा जल्दी जाना है।
यार हमेशा तू कहता रहता है कि आज रात भर पीयेंगे और अब जल्दी जाने की बात कर रहा है।
कमलेश, साहिल और विनय तीनों शराब पीनें लगते हैं और सेक्सी जोक्स पर हॅसते है।

क्या हुआ कमलेश ! तुम बड़े परेशान दिख रहे हो।

सही कह रहे हो। यह सब काम तो करते है नही केवल चिल्लाते रहते हैं इनका केवल यही काम है।
आज फिर बॉस ने बिना किसी बात के मुझ पर चिल्लाया। काश मेरी लाइफ भी मेरी पत्नी की तरह होती। इन महिलाओं की जिन्दगी अच्छी है न कमाने की कोई चिंता, न बिना बात पर चिल्लाने वाला कोई बॉस। बस दिन भर घर में टीवी देखो और गॉशिप करो।

मेरी पत्नी की शिकायतें सुन–सुनकर तो मुझे गुस्सा ही आने लग जाता है लेकिन एक दिन दो थप्पड़ मारने के बाद से वह चुपचाप रहती है।
औरतों को काबू मे रखना ही चाहिये इनको थोड़ा सा ढील देते ही यह सिर पर नाचने लगती है।
सही कह रहे हो शाहिल। सच में महिलाओं को तो काबू में रखना ही चाहिये।
जब भी मेरी वाइफ की आवाज़ थोड़ी सी भी तेज होती है तो एक लगा देता हूँ।
शाहिल कोई सेक्सी जोक मारता है और सभी उस पर हसॅने लगते हैं।
तुम अपनी पत्नी से क्यों डरते हो। घर जाते ही उसको दिखा देना कि कौन बॉस है।
क्या लता को पता लगेगा कि मैं पीकर आया हूँ।
तीनों फिल्मों के गीत गाते हुए अपने अपने घर के लिए निकल जाते हैं।
तू चीज बड़ी है मस्त मस्त.....
दरवाजा खोलो, कब से खड़ा हूँ।
कमलेश अपने घर के दरवाजे पर खड़ा है और दरवाजा खटखटा रहा है।
KNOCK
KNOCK
ऐसा क्या कर रही हो जो इतना समय लग रहा है।
कमलेश जोर से फिर दरवाजा पीटता है।

प्लीज एक मिनिट रूको।
लता दरवाजा खोलती है।
ऐसा क्या कर रही थी जो दरवाजा खोलने में इतना समय लग रहा है। कितनी देर से मै इन्तजार कर रहा हूँ।
बिना किसी के बात के तुम क्यों गुस्सा हो रहे हो ? मैं खाना बना रही थी और थोड़ा समय लग गया बस। मैं कोई मशीन नहीं हूँ।
तुम मुझ से बहस कर रही हो। आवाज नीचे कर, आजकल बहुत ज्यादा बोलने लग गयी हो ।
कमलेश गुस्सा होकर अपने कमरे में चला जाता है।
Z..ZZ....ZZZZZ ZZ..ZZ
कमलेश नशे मे होने के कारण खाने के बाद तुरन्त सो जाता है और लता रसोई में बर्तन साफ कर रही है।

दूसरे दिन सुबह
कमलेश अपनी दिनचर्या के अनुसार
लता जल्दी से नाश्ता दे दो मुझे और मम्मी को
ला रही हूँ ।
कितना समय और लगेगा तुम्हें।
लता .... लता....
कहॉ हो तुम ?
तुम्हें दिखता नहीं है मुझे भूख लग रही है। नाश्ता कहॉ है ?
कमलेश नाश्ता कर अपने दफ्तर पहुचता है।
मै कोई बहाने नही सुनना चाहता। अगर तुमने आने वाले महीने में अगर ये टारगेट पूरे नहीं किये तो मैं तुम्हें जॉब से निकाल दूंगा।
सर लॉकडाउन के कारण हम इस क्वार्टर के टारगेट पूरे नहीं कर पाये और दूसरी कम्पनियों की भी यह स्थिति है।
कमलेश आफिस के बाद सीधे अपने घर आता है
लता को मेरी डॉट का कुछ तो असर हुआ। आज तो दरवाजा पहले से खोल के रखा है।

लता कमलेश और उसकी सॉस को खाना परोसती है
मैं दिन भर मेहनत से काम करता हूँ और तुम ऐसा बेस्वाद खाना बनाकर देती हो
तुम अच्छा खाना नहीं बना सकती हो।
कमलेश नाराज हो जाता है और खाने की प्लेट फेंक देता है।
अरे क्या हुँआ। फिर तुमने बेकार सा खाना बनाया। तुम्हें कुछ नहीं आता है। मेरे तो बेटे की जिन्दगी ही खराब कर दी तुमने। दिनों दिन बहुत ही लापरवाह हो गयी हो।
पता नही किस बुरी घड़ी में मैंने यह रिश्ता तय किया था।
वाकई में तुम कोई काम की नहीं हो।
मेरी लाइफ का तो कोई मतलब ही नहीं रहा है। दिन भर काम करती रहती हूँ और कमलेश शाम को आते ही गाली गलौच, चिल्लाने लग जाता हैं।

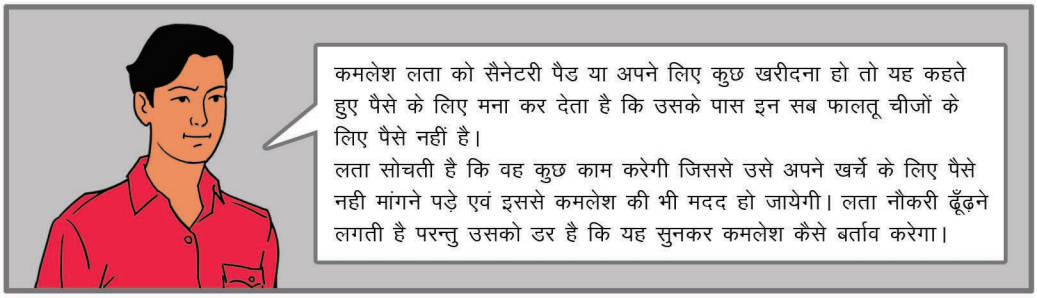
कमलेश लता को सैनेटरी पैड या अपने लिए कुछ खरीदना हो तो यह कहते हुए पैसे के लिए मना कर देता है कि उसके पास इन सब फालतू चीजों के लिए पैसे नहीं है।
लता सोचती है कि वह कुछ काम करेगी जिससे उसे अपने खर्चे के लिए पैसे नही मांगने पड़े एवं इससे कमलेश की भी मदद हो जायेगी। लता नौकरी ढूँढ़ने लगती है परन्तु उसको डर है कि यह सुनकर कमलेश कैसे बर्ताव करेगा।

मुझे कुछ बात करनी थी।

क्या है ? पैसे के लिए मत बोलना बस।

नहीं पैसे की बात नहीं है। अपने पड़ौस में जो विकास भैया है वह किसी संस्था में काम करता है जो महिलाओं को ड्राइविंग सीखा कर उनको जॉब लगाने का काम करती है। मैंने ज्वॉइन करने का सोच लिया है जिससे दोनो मिलकर कमायेंगे तो अच्छा होगा।

तुम्हें क्या लगता है जो तुम सोचती हो वो सही है। मुझे पता है तुम कौनसी जॉब की बात कर रही हो। बंद करो यह बकवास और भूल जाओ घर से बाहर जा कर काम करने के बारे मे। मुझे कोई जरूरत नहीं है तुम्हारे पैसों की, तुम्है थोड़ा अदांजा भी है लोग मेरे बारे मे क्या–क्या बात करेंगे।

ऐसा नहीं है जैसा आप सोच रहे हो।

कमलेश लता को थप्पड़ मार देता है और गाली गलौच करने लगता है।
तुम मुझ से बहस कर रही हो।

प्लीज रूक जाओ मुझे क्यों मार रहे हो । मैंने ऐसा क्या बोल दिया।
कमलेश लता को मारता रहता है..

लता दुखी हो जाती है कि उसका पति कभी नहीं समझेगा कि वह क्या चाहती है।

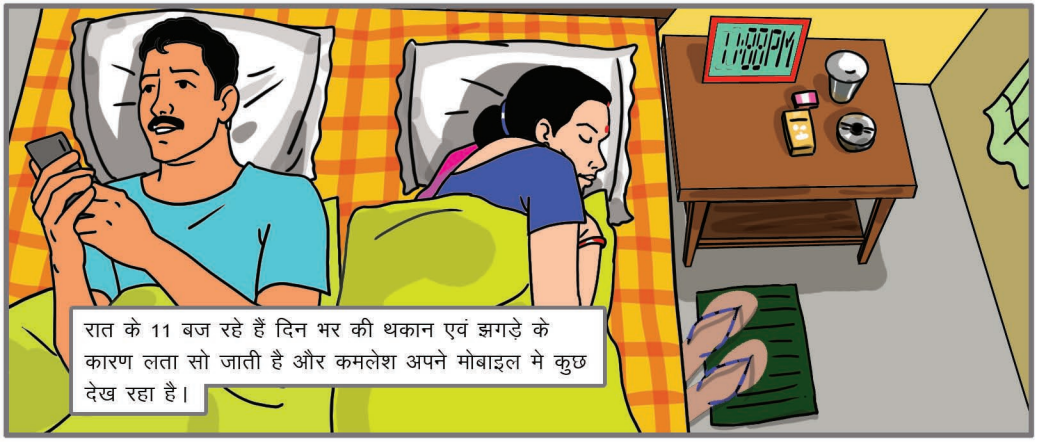
रात के 11 बज रहे हैं दिन भर की थकान एवं झगड़े के कारण लता सो जाती है और कमलेश अपने मोबाइल मे कुछ देख रहा है।

XXX VIDEOS
वह मोबाइल में पोर्न फिल्म देखने लगता है एवं उसकी सेक्स करने की इच्छा होती है।

लता.....लता उठो
नहीं आज नहीं। मैं बहुत थकी हुई हूँ ,मेरी तबीयत ठीक नहीं है। प्लीज मुझे सोने दो।
वह लता को जगाता है और लता से जबरदस्ती करने लगता है। लता उसको मना करती जिससे कमलेश और नाराज हो जाता है।

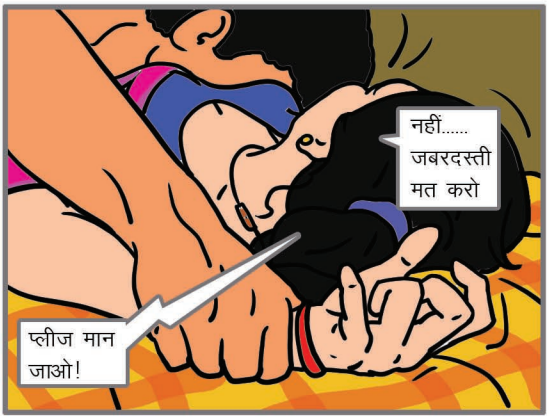
नहीं..... जबरदस्ती मत करो
प्लीज मान जाओ!

यह तो हर दिन की बात हो गयी। अब मुझसे नहीं सहा जायेगा।

ऐसा केवल लता के साथ ही नहीं हो रहा है, हमारे आस पास समुदाय में कई ऐसी महिलाएँ हैं जिनके साथ हर दिन इस प्रकार की हिंसा होती है। इस प्रकार की हिंसा केवल निम्न वर्ग में ही नही बल्कि उच्च वर्ग की महिलाओं के साथ भी होती है चाहे वह फेक्ट्री वर्कर हो या किसी आफिस में काम करने वाली महिला। शराब या नशे की वजह से हिंसा करना केवल एक बहाना है बल्कि यह तो इस पितृसत्ता की व्यवस्था में महिलाओं को कमतर समझना और अपने आप को शक्तिशाली एवं धोंसपूर्ण मर्द के रूप में स्थापित करने की सोच से महिलाओं के साथ मारपीट, गाली गलौच करने से है।

हर दिन बहुत बहुत छोटी–छोटी बातों पर कमलेश एवं उसकी सॉस के द्वारा लता के साथ मारपीट होती थी।

कुछ दिनों लगातार लता के साथ होने वाली इस हिंसा को वह सहती रही परन्तु एक दिन वह कमलेश को छोड़कर अपने पीहर जाने का निर्णय लेती है।
अब मै इसे और ज्यादा दिनों तक नही सह सकती।

हैलों सुरेश !!

लता फोन पर ही रोने लग जाती है।

क्या हुआ लता ? सब ठीक तो है तुम बहुत डरी हुई हो ! मुझे बताओं क्या हुआ।

प्लीज मुझ पर गुस्सा मत होना पर अब मैं इसे सहन नहीं कर सकती। मुझे हर दिन तेरे जीजा जी छोटी छोटी बातों पर मारते हैं ,गाली देते है और मेरे साथ जबरदस्ती करते है। मै बहुत सहने के बाद आज तूम्हे बता रही हूँ।
दीदी इसमें सॉरी की कोई बात नहीं है। अच्छा हुआ कि तुमने मुझे यह बता दिया। अब तुम्हें कोई जरूरत नहीं है वहॉ रहने की। यह भी तुम्हारा घर है। आप तैयार रहना, मैं अभी आ रहा आपको लेने।
शुकिया ! सुरेश मुझे समझने के लिए।
कोई दिक्कत नहीं है आप अपना सामान पैक कर लो.... मैं पहुचॅ रहा हूँ।
ठीक है।
लता ने तय कर लिया था कि अब वह कमलेश के साथ नहीं रहेगी। लता का भाई उसको लेने आ जाता है। लता का साथ देने के लिए सुरेश के आते ही लता उसे गले लगा लेती है और कमलेश के आफिस से आने से पहले ही लता अपने भाई के साथ चली जाती है।

शाम का समय है। कमलेश ऑफिस से आता है।बड़ा थका हुआ लग रहा है।
लता एक चाय देना मुझे जल्दी से।

लता.... लता... बहरी हो गयी क्या?

कमलेश बैड पर रखा एक पेपर उठाता है।
Kamlesh,
I am leaving you
house for ever.
Do not contact
Lata

कमलेश ने कभी नहीं सोचा था कि लता में इतना साहस होगा कि वह घर छोड़ कर चली जायेगी ।

कमलेश लता को कॉल करता है परन्तु वह कोई जवाब नहीं देती है।
Lata
Call Disconnected

कमलेश गुस्से में है और लता को कुछ बड़बड़ा रहा है। उसको अब रसोई में काम करना पड़ रहा है।

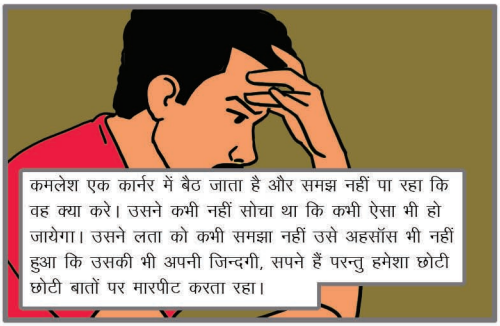
कमलेश एक कार्नर में बैठ जाता है और समझ नहीं पा रहा कि वह क्या करे। उसने कभी नहीं सोचा था कि कभी ऐसा भी हो जायेगा। उसने लता को कभी समझा नहीं उसे अहसॉस भी नहीं हुआ कि उसकी भी अपनी जिन्दगी, सपने हैं परन्तु हमेशा छोटी छोटी बातों पर मारपीट करता रहा।

अपने भाई के सहयोग से लता आज़ाद के "वीमेन विथ व्हील्स" कार्यक्रम से जुड़ जाती है। अपना कोर्स खत्म होने के बाद नौकरी करने लग जाती है और सम्मान के साथ अपनी तरीके से जिन्दगी जीती है।

सार नोट :

महिलाओं और लडकियों के साथ होने वाली हिंसा मानव अधिकारो का हनन एवं दुरूपयोग है। यह विश्व के सभी देशों में निम्न एवं उच्च वर्ग में व्याप्त है जहॉ महिलाओं के साथ किसी न किसी प्रकार की हिंसा होती है। सालों से कई प्रयासों के बावजूद महिलाओं को आज भी अपनी जिंदगी में हिंसा से सघर्ष करना पड़ रहा है। हिंसा का नुकसान न केवल महिलाओं बल्कि बच्चों परिवार और समुदाय में सभी पर देखने को मिलता है। इसका सीधा अर्थ यही निकलता है कि पितृसत्ता वाली इस मर्दानगी की परिभाषा से पुरूषों को समाज में एक ऐसी छवि बरकरार रखने का दबाव होता है जिसमें ढलकर या तो वह हिंसक, असंवेदनशील, मालिकाना हक जताने वाले बनते हैं या अपनी इच्छाओं और सवेंदनाओं को दिखाने में असक्षम मनुष्य बन जाते हैं। समय के साथ चीजें बदली जरूर हैं पर अभी इस बुनियादी ढांचे को तोड़ने वालों की सख्या बहुत कम है और हमें जरूरत है कि हम इस परिभाषा को तो डपुरूष–स्त्री के दायरों से उठने का प्रयास करें।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की परिभाषा के अनुसार किसी भी महिला के साथ शारीरिक, मानसिक, यौनिक अमानवीय व्यवहार जो घर या सार्वजनिक स्थान पर किया जाता हो एवं कोई भी ऐसा कृत्य जिससे उसे डर या भय हो या लड़की या महिला समझ कर उसके साथ मारपीट, तानेदेना, गाली गलौच करना, आगे बढनें के अवसर नही देना आदि को जेंडर आधारित हिंसा माना जाता है। विश्व में हर 3 में से 1 अपने में जीवन शारिरीक या यौनिक हिंसा की शिकार होती है। इस प्रकार की हिंसा अधिकांशतः पुरूषों के द्वारा ही की जा रही है।

जेण्डर भेदभाव महिलाओं के साथ पूरे जीवन चक्र में घटित होता है। यह भेदभाव जहॉ एक ओर पुरुषों को तमाम सुविधाओं के साथ आगे बढ़ाता है, वहीं दूसरी ओर महिलाओं को पीछे धकेलता है। जिसकी वजह से समाज में, उनकीदोयम् दर्जे की स्थिति बन जाती है। जैसे हम कहानी में देख सकते हैं कि कैसे सुनील लता को किसी भी कार्य करने मे सक्षम नही मानता और उसे लगता है कि यह महिला है यह कैसे पुरूषों के काम कर सकती है। हमारे समाज मे पुरुष या महिला क्या काम कर सकती है यह उनकी क्षमता तय करेगी ना कि उनका पुरुष या महिला होना।

जेण्डर की धारणाओं का पुरुष/स्त्री दोनों के जिन्दगी पर असर पड़ता है। इससे असमान सत्ता का निर्माण होता है। जिससे एक सत्ताधारी तो दूसरा सत्ताहीन बनता है। यह एक व्यवस्था की तरह काम करता है। इस चक्रिय प्रणाली में हर एक उपचक्र एक दूसरे को पालता और पनपाता हैं।

कहानी में हम देख सकते है कि कमलेश को उसके बॉस से टारगेट पूरे नही होने पर डॉट मिलती थी तो वह इसका गुस्सा लता पर निकालता था। पुरुषों को असफलताओं का सामना करने के लिए बचपन से तैयार नहीं किया जाता, इसी कारण बहुत सारे पुरुष असफल होने के डर के कारण तनाव महसूस करते है और इस तनाव से मुक्ति पाने के लिए बहुत सारे पुरुष नषा या हिंसा का रास्ता अपनाते हैं। जिसमें अततः पुरुष को ही नुकसान होता है।

अगर हम चाहें तो इस व्यवस्था को बदल सकते हैं, परन्तु इसके लिए हमें व्यवस्था के हर उपचक्र को समझना होगा और हमें ध्यान रखना होगा कि इस चक्रिय प्रणाली की एक कड़ी टूट जाती है, तो सम्पूर्ण चक्र टूट सकता है।

वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में पुरूषों को पाबंदियों की तुलना मे बहुत सारी सुविधाएं प्राप्त हैं तथा जो पांबदिया दिख रही है वे भी कभी–कभी सुविधाएं भी प्रदान करती हैं। पुरूष अपनी सुविधाओं को बनाये रखना चाहते हैं क्योंकि इनसे उन्हें अनेक प्रकार की सुविधाएं व अवसर मिल जाते हैं। पुरुष अपनी सुविधाओं को बनाये रखने के लिए कई बार मानसिक तनाव व भय की स्थिति में आ जाता है जिससे वह नशा, हिंसा आदि का सहारा लेने लगता है। इसी प्रकार पुरुषों पर पाबंदियों के पीछे अनेक सामाजिक कारण हैं जो पितृसत्तात्मक व्यवस्था में पुरुष होने के नाते है जिसका भी व्यापक दुष्परिणाम पुरुषों को ही उठाना पड़ता है। इसलिए यह जरूरी है कि इन प्रतिबन्धों को हटाया जाए लेकिन इसके लिए जरूरी है कि पुरुष अपनी कुछ सुविधाओं को छोड़े और इसकी शुरूआत बचपन से ही की जानी चाहिये।

हमारे समाज में ऐसे कई प्रकार के संबंध देखे जा सकते हैं जहां एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से अधिक प्रभुत्वशाली होता है, जैसे युवा तथा वयस्क, विद्यार्थी तथा शिक्षक, बड़े और कम उम्र के छात्र, छात्र और छात्रा, कर्मचारी तथा अधिकारी। कई बार इन संबंधों में रहने वाले असंतुलन के फलस्वरूप एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को मात्र एक 'वस्तु' मानता है। उस पर अपनी मर्जी या इच्छाएं थोपता है और उसकी भावनाओं को मान्यता नही देता। इन सम्बन्धों में सत्ता के असंतुलन से गंभीर परिणाम हो सकते हैं। जब हम इन सम्बन्धों पर विचार करते हैं तो इस विडंबना को देखना आवश्यक है कि हम स्वयं कई रिश्तों में खुद सत्ताहीन होते हैं और हिंसा का शिकार बनते हैं और वही दूसरे रिश्तों में सत्ताधारी हो कर दूसरों पर अत्याचार करते हैं।

महिलाओं पर होने वाली जेण्डर आधारित हिंसा केवल आपसी सम्बन्धों में ही नही होती बल्कि वह एक ढाँचागत रूप में भी होती है। हिंसा के होने का मुख्य कारण पत्नी/महिला का मुखर होना होता है। जेण्डर सम्बन्धों में पुरुष यह क्यों नहीं स्वीकारता कि पत्नी को भी अपना पक्ष रखने के लिए मुखर होने का अधिकार है। कहानी मे कमलेश ने कभी भी लता की बात को, उसकी इच्छाओं को नहीं समझा, सहयोग नहीं किया और छोटी छोटी बातों पर उसके साथ मारपीट करता रहा जबकि अपनी बात रखना या मुखर होना दोनों का अधिकार है। यदि कुछ पुरुष निर्णय लेने में गलत हो सकते हैं, तो कुछ बार महिला भी गलत हो सकती है। किन्तु हर बार महिला के निर्णय को दबाया जाता है या उसके मुखर होने पर गुस्सा होना या उस पर हिंसा को उचित ठहराया जाता है। यह सही नहीं है। हिंसा हर हाल में गलत व अस्वीकार है। हिंसा आप अपने साथ करें या पत्नी के ऊपर अंततः इससे पूरे परिवार का नुकसान होता है। हिंसा हमेशा महिला पुरुष के बीच सत्ता सम्बन्धों /रिश्तों का परिणाम है। यदि हमें रिश्तों में समानता लाना है तो पुरुष को भी सीखना पड़ेगा कि हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है। जिस घर में हिंसा होती है, उस परिवार के सभी सदस्य हमेशा तनावपूर्ण स्थिति में होते हैं।

हमारे समुदाय में कई ऐसे पुरुष हैं जो किसी भी प्रकार की हिंसा नही करते है और कहीं न कहीं ऐसे पुरुषों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है कि वह हिंसा को रोकने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। जब भी अपने घर में, समुदाय मे महिलाओं के साथ हिंसा होती है तो उससे किनारा करने के बजाय उसका विरोध करना चाहिए।

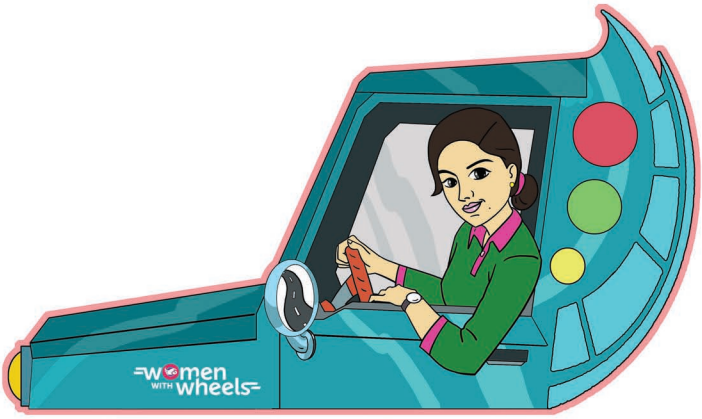

आज़ाद फाउण्डेशन के बारे में

आज़ाद फाउण्डेशन एक नारीवादी संस्था है जो सामाजिक और धार्मिक बटवारे के परे जाकर संसाधन विहीन महिलाओं को गैर परम्परागत रोजगार मे प्रशिक्षित कर उन्है सशक्त बनाने का कार्य करता है । आज़ाद पितृसत्ता की सीमाओ और ढांचो को तोड़ने के लिए प्रतिबद्ध है ताकि महिलाये अपने जीवन पर नियंत्रण कर सके जिससे वह सम्मान के साथ अपना जीवनयापन कर सके। यह सब हम बदलावकारी क्षमतावर्धन कार्यक्रम के जरिये करते है जो गैर परम्परागत रोजगार की दक्षता व स्व–विकास की जरुरतों को संबोधित करता है । हम समुदाय मे पुरुषो के साथ भी जेण्डर समानता के लिए काम करते है जिससे वह धोसपूर्ण मर्दानगी एवं पितृसत्ता की व्यवस्था को चुनौती दे जिससे समुदाय में महिलाओं के विकास के लिए सुरक्षित एवं सहयोगात्मक वातावरण का निर्माण हो।

जेण्डर समानता के लिए पुरुषों के साथ कार्य के बारे में

आज़ाद फाउण्डेशन का मानना है कि जेण्डर समानता के लिए पुरुषों के साथ कार्य करना महिलाओ के सशक्तिकरण का हिस्सा है जिससे महिलाएँ गैर परम्परागत रोजगार में शामिल हो सके एवं सम्मान के साथ अपनी जिन्दगी के फैसले लेने का नियंत्रण स्वंय के पास हो ।

आज़ाद फाउण्डेशन 14–20 वर्ष के युवाओं के समुदाय में समूह बनाकर, सामाजिक अभियानों मे भागीदारी, स्पोर्टस, नुक्कड नाटक आदि के माध्यम से उनके साथ कार्य करता है। समूह में कुछ सदस्यों का चयन कर उनमें नेतृत्व क्षमता का भी विकास किया जाता है जिससे वह अपने समूह के सदस्यो के सहयोग से समुदाय, परिवार मे जेण्डर आधारित हिंसा ,भेदभाव आदि का विरोध कर सके।

''मेन फॉर जेन्डर जस्टिस '' कार्यक्रम के तहत युवा लडकों एवं पुरुषों की पितृसत्ता, जेण्डर के आधार पर होने वाली हिंसा, घर के कार्यो में हिस्सेदारी, धोंसपूर्ण मर्दानगी आदि पर उनकी समझ बनाने का कार्य करते है जिससे वह जेण्डर समानता के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन कर जिन्दगी में रूढिवादी सामाजिक नियमों को चुनौती दे सके और साथ ही समुदाय में महिलाओं को गैर परम्परागत रोजगार से जुडने में सकारात्मक वातावरण बनाये जिससे वह सम्मान के साथ जीवन यापन कर सके। पुरुषों एवं युवाओ द्वारा घर के कार्यो में भागीदारी से महिलाओं को घर से बाहर जाकर आय सर्जन के कार्य करने, शिक्षा एवं कुछ नया सीखने के अवसर एवं माहौल मिलेगा।

जेण्ड़र समानता के लिए मेरे वादे/एक्शन

व्यक्तिगत एवं पारिवारिक स्तर पर :

1. .....

2. .....

3. .....

सामुदायिक स्तर पर :

1. .....

2. .....

3. .....

लेखक
''मेनं फॉर जेण्डर जस्टिस टीम, आज़ाद फाउण्डेशन
R-10 ए, फ्लेट नम्बर 7, 2nd फ्लोर, नेहरु एन्कलेव,
कालकाजी, नई दिल्ली, 110019
ग्रफिक आर्टिस्ट
सुमन्त्रा मुखर्जी

सहयोंग
EMpower – The Emerging markets foundation

Azad Foundation EMpower